इकाई-III

11. सुदामा चरित

–नरोत्तमदास

प्रस्तावना प्रसंग–

अरे द्वारपालो! कन्हैया से कह दो,
कि दर पे सुदामा गरीब आ गया है।
भटकते–भटकते, न जाने कहाँ से,
तुम्हारे महल के करीब आ गया है।

प्रश्न

1. इन पंक्तियों में किस घटना का वर्णन है?
2. कृष्ण–सुदामा की मित्रता के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. अपने मित्रों के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है?

SCERT TELANGANA

सीस पगा न झँगा तन में, प्रभु! जाने को आहि बसे केहि ग्रामा।
धोती फटी–सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह को नहिं सामा।।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकिसों बसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम बतावत आपनो नाम सुदामा।।

ऐसे बेहाल बिवाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए।
हाय! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए।।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।।

कछु भाभी हमको दियो, सो तुम काहे न देत।
चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहो केहि हेतु।।

आगे चना गुरुमातु दए ते, लए तुम चाबि हमें नहिं दीने।
स्याम कह्यो मुसकाय सुदामा सों, "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।।
पोटरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा रस भीने।
पाछिलि बानि अजौ न तजो तुम, तैसई भाभी के तंदुल कीन्हे।।"

वह पुलकनि, वह उठि मिलनि, वह आदर की बात।
वह पठवनि गोपाल की, कछू न जानी जात।।
कहा भयो जो अब भयो, हरि को राज–समाज।
घर–घर कर ओड़त फिरे, तनक दही के काज।
हौं आवत नाहीं हुतौ, वाही पठयो ठेलि।।
अब कहिहौं समुझाय कै, बहु धन धरौ सकेलि।।

वैसोई राज–समाज बने, गज, बाजि घने मन संभ्रम छायो।
कैधों परयो कहुँ मारग भूलि, कि फैरि कै मैं अब द्वारका आयो।।
भौन बिलोकिबे को मन लोचत, सोचत ही सब गाँव मझायो।
पूँछत पाडे फिरे सब सों पर, झोपरी को कहुँ खोज न पायो।

कै वह टूटी–सी छानी हती, कहँ कंचन के अब धाम सुहावत।
कै पग में पनही न हती, कहँ लै गजराजहु ठाढ़े महावत।।
भूमि कठोर पै रात कटै, कहँ कोमल सेज पै नींद न आवत।।
कै जुरतो नहिं कोदो सवाँ, प्रभु के परताप तें दाख न भावत।।

SCERT TELANGANA

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. सच्चा मित्र बड़ी मुश्किल से मिलता है। सच्चे मित्र में क्या-क्या गुण होने चाहिए? मित्रों से चर्चा कीजिए।
2. दो व्यक्तियों में अच्छी मित्रता हो सकती है-
   - यदि दोनों के गुण आपस में मिलते हों
   - यदि दोनों के गुण आपस में नहीं मिलते हों

   दोनों के पक्ष में मत दीजिए और चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई? अपने शब्दों में लिखिए।
2. "पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जल सों पग धोए।" भाव स्पष्ट कीजिए।
3. "चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

   क. उपर्युक्त पंक्तियाँ कौन किससे कह रहा है?

   ख. इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

   ग. इस उपालंभ (शिकायत) के पीछे कौनसी पौराणिक कथा है?
4. द्वार से खाली लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? वे कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे? सुदामा के मन की दुविधा अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।
5. अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाये तब उनके मन में क्या-क्या विचार आये?
6. निर्धनता के बाद मिलनेवाली संपन्नता का चित्रण कविता की अंतिम पंक्तियों में वर्णित है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।
7. "कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
   विपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।"

   इस दोहे में रहीम ने सच्चे मित्र की पहचान बताई है। इस दोहे और सुदामा चरित में किस प्रकार की समानता दिखाई पड़ती है?

SCERT TELANGANA

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. यदि आपका कोई अत्यंत प्रिय मित्र आपसे बहुत वर्षों बाद मिलने आये तो आप को कैसा अनुभव होगा?
2. कृष्ण ने सुदामा की सहायता उनके समक्ष नहीं की। उन्होंने उनके जाने के बाद अप्रत्यक्ष रूप से उनकी सहायता की। कृष्ण ने ऐसा क्यों किया होगा?
3. आपका सबसे अच्छा मित्र कौन है? आप उसको क्यों पसंद करते हैं?

II. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. उच्च पद पर पहुँच कर या अधिक समृद्ध होकर व्यक्ति अपने निर्धन माता-पिता-भाई-बंधुओं से नज़र फेरने लगता है। ऐसे लोग सुदामा चरित पढ़कर क्या सोचते होंगे?
2. एक अच्छी पुस्तक व्यक्ति का सच्चा मित्र होती है। ऐसा क्यों कहा जाता है?

शब्द भंडार

1. पुलकनि - पुलकित होना

   लोचत - ललचाता है

   उपर्युक्त शब्द तथा उनके प्रचलित रूप भाव को उजागर करते हैं। पाठ में आये ऐसे ही अन्य शब्दों एवं उनके प्रचलित रूपों की सूची बनाइए।

2. 'करुनानिधि' अर्थात् 'करुणानिधि' दो शब्दों के योग- करुणा + निधि से बना है। इन शब्दों के अर्थबोध भी अलग-अलग हैं। कविता में आये ऐसे ही अन्य शब्द ढूँढ़ें और लिखें।

भाषा की बात

'पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।'

ऊपर लिखी गई पंक्ति ध्यान से पढ़िए। इसमें बात को बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर चित्रित किया गया है। जब किसी बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है तो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। आप कविता में से एक अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण छाँटिए।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

प्रशंसा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला नहीं रह सकता। समाज में उसके अनेक मित्र समय-समय पर बनते ही रहते हैं। वे एक-दूसरे का सहयोग कर आगे बढ़ते हैं। अब आप बताइए कि मित्रों का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

क. इस कविता को एकांकी रूप में लिखिए। उसका अभिनय कक्षा में मित्रों के साथ कीजिए।

ख. इस कविता का गायन प्रस्तुत कीजिए।

ग. अपने मित्र को किसी अवसर पर बधाई देने के लिए एक ग्रीटिंग कार्ड तैयार कीजिए।

परियोजना कार्य

द्रुपद और द्रोणाचार्य भी सहपाठी थे, इनकी मित्रता और शत्रुता की कथा के बारे में पता लगाइए और उसे संक्षिप्त में लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। 2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ। 3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ। 4. मित्रता का महत्व बता सकता/सकती हूँ। 5. परिचित कथारूपी कविता संवाद के रूप में प्रस्तुत कर सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA